ओम् शान्ति 12-8-09 मधुबन

विशेष कुमारों की योग भट्ठी में प्यारे अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश – दादी गुल्जार

आज बापदादा के पास विशेष आप सब कुमारों की यादप्यार लेते हुए पहुंची तो बापदादा सामने खड़े थे और मीठी दृष्टि देते मुस्कराते मिलन मना रहे थे। आज बापदादा की दृष्टि में बहुत विशेषता दिखाई दे रही थी, बाबा के दोनों नयनों की दृष्टि ऐसी थी जो दूर से जैसे चुम्बक अपनी तरफ स्वतः ही खींचता है, ऐसे ही मैं अनुभव कर रही थी कि मैं स्वयं नहीं चल रही हूँ लेकिन कोई खींचकर अपनी तरफ ले जा रहा है। बस सेकण्ड में ही अपने को बाप के सम्मुख अनुभव करने लगी। जैसे ही सम्मुख पहुंची तो बापदादा ने अपने अमूल्य बांहों में समा लिया और बाबा बोले, बच्ची अब समय अनुसार हर एक बच्चे को ऐसा रूहानी शक्तियों का चुम्बक बनना है जो कमजोर आत्मायें आपकी रूहानी शक्ति से बाप के आगे आ सके क्योंकि दिन प्रतिदिन आत्मायें अनेक परेशानियों में निर्बल बन चुकी हैं। तो ऐसे बेसहारे वालों का सहारा आप बच्चे ही हैं।

उसके बाद बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो ? मैं बोली बाबा, आज तो चारों ओर के कुमारों की भट्ठी हो रही है, उन्हों की यादप्यार लाई हूँ। बापदादा मुस्काये और बोले, कुमार तो सारे विश्व में सहज नाम बाला कर सकते हैं क्योंकि आजकल कुमारों पर गवर्मेन्ट का भी खास ध्यान है कि कुमार ऐसे वायुमण्डल में रूहानी वृत्ति वाले बनें तो वायुमण्डल को बदल सकते हैं और यह तो बहुत बड़ा संगठन है इसलिए ऐसा कोई प्लैन बनावें जो सबका ध्यान जाए कि ऐसा भी कुमार ग्रुप अपना परिवर्तन कर औरों को भी परिवर्तन करा रहे हैं। बाप जानते हैं कि यूथ ग्रुप सेवा कर रहे हैं लेकिन अभी और भी गवर्मेन्ट के ध्यान में आता जाए। उसके बाद मैंने बाबा को कहा कि बाबा आज भी हर एक कुमार उत्साह से दृढ़ संकल्प कर परिवर्तन के उमंग-उत्साह में हैं। बाबा बोले, अब तो समय ही ऐसे तीव्र पुरुषार्थ का है कि दृढ़ संकल्प किया और हुआ।

उसके बाद बाबा बोले, बापदादा यह देखने चाहते हैं कि जैसे यहाँ उमंग-उत्साह से हर एक बच्चा कहता ``हमारा बाबा से 100 परसेन्ट स्नेह है'', तो जहाँ स्नेह है वहाँ यह छोटी-छोटी बातें त्याग करना क्या बड़ी बात है! ऐसे कहते बाबा बोले, इस ग्रुप को भी बाबा वतन में बुलाकर सैर कराते हैं। ऐसे कहते ही बापदादा के संकल्प से कुमार ग्रुप वतन में पहुंच गया। आगे क्या देखा, सब आते गये और 6-7 लाइनों में वी रूप से खड़े हो गये और बापदादा इतने वी शेप के ग्रुप के बीच में लाइट के चबूतरे पर बैठ सबको दृष्टि दे रहे थे। यह वी के अन्दर वी का दृश्य भी बड़ा सुन्दर लग रहा था। बापदादा की सबको दृष्टि मिलते सब लव में लवलीन हो रहे थे। इतने में बाबा के ऊपर भिन्न-भिन्न लाइट के अक्षरों में लिखत आई ``बच्चे विजय तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है''। सबकी दृष्टि लिखत को देख बहुत हर्षित हो रही थी। बापदादा दृष्टि देते बोले, बच्चे सदा कोई भी कार्य करो तो यह स्लोगन दिल में पक्का हो कि विजय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। हमारे से कोई छीन नहीं सकता। ऐसे उमंग-उत्साह से आगे उड़ते और उड़ाते रहना है। उसके बाद बाबा बोले, इन बच्चों को याद सौगात क्या देंगी ? ऐसे कहते बाबा ने संकल्प किया और सौगातें इमर्ज हो गई। सौगातें थी बहुत सुन्दर चमकते हुए कंगन थे, जिसमें छोटे छोटे हीरों से लिखत थी - ``जीरो और रूहानी हीरो भव''। बाबा हर एक को दृष्टि दे कंगन दे रहे थे तो सभी बहुत-बहुत हर्षित हो रिफ्रेश हो रहे थे। उसके बाद बाबा ने दृष्टि देते मर्ज कर दिया और मैं भी साकार वतन में पहुंच गई।

ओम् शान्ति।